Department of Hindi

Lakhimpur Girls' College

Under Choice Based Credit System (CBCS)

Programme Outcomes (Bachelor in Hindi)

किसी भी विषय को पढ़ने के लिए उस विषय के अंतर्गत आने वाले हर एक विधाओं पहलुओं के बारे मे जानना आवश्यक है। हिन्दी विषय में स्नातक लेने से छात्राओं को हिन्दी साहित्य का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है।

हिन्दी साहित्य को पढ़ने के लिए विद्वानों ने इसके इतिहास को चार कालखण्डों में विभक्त किया है (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल), यहा इन चारों कालखण्डों के नामकरण, काल विभाजन, प्रविर्त्तियों के साथ साथ रचनाओं तथा रचनाकारों के बारे में विस्तृत वर्णन मिलता है। इसे पढ़कर हिन्दी साहित्य के इतिहास का सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होता है। हिन्दी साहित्य के अनेक विधाओ का जन्म आधुनिक कल में ही हुआ है उन विधाओं का विस्तृत वर्णन यहा उपलब्ध है और एक महत्वपूर्ण बात, चुकी हमारा महाविद्यालय असम में है इसीलिए यहा एक पेपर असमिया साहित्य का भी है, इससे छात्राओं को असमिया साहित्य का ज्ञान भी मिलता है।

यहा छात्राओं को काव्यशास्त्र के दो खण्ड– भारतीय काव्यशास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अंतर्गत आने वाले प्रत्यक सिद्धांतों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। दूसरी ओर भाषा विज्ञान का ज्ञान भी मिलता है जिससे भाषा के वैज्ञानिक पक्ष के बारे में जानकारी मिलती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी, अनुवाद आदि अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं का ज्ञान यहा उपलव्ध है।

अतः हिन्दी साहित्य को पढ़ने से छात्राओं को न केवल हिन्दी साहित्य का ज्ञान ही मिलेगा बल्कि भारतीय साहित्य का ज्ञान भी प्राप्त होगा तथा भारतीय परिपेक्ष के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी मिलती है और भारतीय विचारधारा से परिचित हो पाते है।

Course specific Outcomes

Honours

C – 1 हिन्दी साहित्य का इतिहास: (रीतिकाल तक)

1. यहां हिंदी साहित्य के काल विभाजन, आदिकाल के नामकरण, पृष्ठभूमि एवं प्रमुख धाराओं के बारे में विस्तृत वर्णन है ।
2. यहां भक्तिकालीन पृष्ठभूमि, प्रवृत्ति एवं परिस्थितियों का विस्तृत वर्णन है।
3. यहां भक्तिकाल के अंतर्गत आने वाले प्रमुख धाराएं – सगुन और निर्गुण धारा का सामान्य परिचय का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. यहां रीतिकालीन परिस्थितियां एवं प्रवृत्तियां, रीतिकाल के नामकरण तथा रीतिकालीन विविध कविताओं का विस्तृत वर्णन है।

C – 2 हिन्दी साहित्य का इतिहास: (आधुनिक कल)

1. यहां आधुनिक काल की पृष्ठभूमि तथा हिंदी नवजागरण में विभिन्न संस्थाओं के योगदान के बारे में ज्ञात होता है।
2. यहां हिंदी पद्य साहित्य का विकास तथा प्रमुख कवियों एवं काव्यधाराओं का सामान्य परिचय मिलता है।
3. यहां हिंदी गद्य के विकास तथा उसके अंतर्गत आने वाले विभिन्न धाराओं जैसे उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक एवं एकांकी, आलोचना आदि का वर्णन मिलता है।
4. यहां हिंदी गद्य की अन्य विधाएं जैसे रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोतार्ज, जीवनी, आत्मकथा आदि का वर्णन मिलता है।

C –3 आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

1. यहां विद्यापति द्वारा रचित तीन पद – 'भल हर भल हरि भल तूअ कला', 'नंदक नंदन कदम्बेरि तरु तरे', 'देख–देख राधा रूप अपार' तथा मीराबाई द्वारा रचित तीन पद – 'पतियाँ मैं कैसे लिखू', 'पायो जी मैं तो रामरतन धन पायो', 'घायल री गति घायल जाण्या' तथा रसखान द्वारा रचित तीन पद का – 'मानुष हौं तौ वही 'रसखानि', 'या लकुटी अरू कामरिय पर', 'मोर – पंखा सिर ऊपर' आदि का वर्णन मिलता है।
2. यहां कबीर के पद 'दुलहिनी गावहु मंगलचार', 'अवधू मेरा मनु मतिवारा', 'माया महा ठगिनी हम जानी' तथा जायसी द्वारा रचित 'नागमती – वियोग – खंड' के अंतर्गत आने वाले 'बारहमासा' के प्रथम बारह पदों का वर्णन मिलता है।
3. यहां सूरदास द्वारा रचित 'मेरौ मन अनत कहां सुख पावै', 'किलकत कान्ह घुटुरुवनी आवत', 'हमारै हरि हारिल की लकरी' और 'अति मलीन वृषभानु – कुमारी' तथा तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली – 1 के अंतर्गत आने वाले 'ऐहि घाटतें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु थाह देखाइहौं जू', 'खेती न किसान को भिखारी को न भीख', विनयपत्रिका के अंतर्गत वाले 'रामको गुलाम, नाम रामबोला राख्यों राम', ऐसी मूढ़ता या मनकी' आदि पदों का वर्णन है।
4. इस इकाई में घनानंद के दो दोहे, रहीम के 10 दोहे तथा बिहारी के 10 दोहे पाए जाते हैं।

C – 4

1. यहां भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'हिंदी भाषा' के 15 दोहे तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित 'प्रियाप्रवास' के अंतर्गत आने वाले षष्टसर्ग के प्रथम 6 छंदों का वर्णन है।
2. यहां मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित यशोधारा – 1,2 तथा रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित 'काव्य सुषमा' के अंतर्गत आने वाले 'जीवन संदेश' कविता का वर्णन है।
3. यहां जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आँसू', 'हे! लाज भरे सौंदर्य बता दो', 'ले चल वहां भुलावा देकर' तथा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'जूही की कली', 'संध्या सुंदरी' और 'बांधो न नाव' आदि कविताओं का वर्णन मिलता है।
4. यहां सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित 'प्रथम रश्मि' और 'वाणी' तथा महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'कौन पहुंचा देगा उस पार' और 'यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलाने दो' जैसे कविताओं का वर्णन मिलता है।

C –5

1. यहां केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'खेत का दृश्य', 'पक्षी – दिन', तथा नागार्जुन के द्वारा रचित 'कालीदास', 'बादल को घिरते देखा है' आदि कविताओं का वर्णन है।

2. यहां रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'हिमालय' और 'बुद्धदेव' तथा माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'गीतों के राजा' और 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का वर्णन मिलता है।
3. यहां सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'बावरा अहेरी', 'सांप के प्रति' और 'हमारा देश' तथा भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा रचित 'लुहार से' और 'गीत फरोश' कविता का वर्णन है।
4. यहां सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'सुहागिन का गीत' और 'विवशता' तथा गिरजा कुमार माथुर द्वारा रचित 'पंद्रह अगस्त' और 'रात हैमंत की' – इन कविताओं का वर्णन मिलता है।

C – 6

1. यहां काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन आदि के बारे में विस्तृत वर्णन है।
2. यहां रस सिद्धांत के अंतर्गत आने वाले रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण तथा अलंकार सिद्धांत के अंतर्गत आने वाले अलंकारों के वर्गीकरणों के बारे में विस्तृत वर्णन है।
3. यहां ध्वनि सिद्धांत के अंतर्गत आने वाले ध्वनि की अवधारणा, ध्वनियों का वर्गीकरण तथा रीति सिद्धांत के अंतर्गत आने वाले रीति की अवधारणा, रीति और गुण तथा रीति के भेद आदि के बारे में विस्तृत वर्णन है।
4. यहां वक्रोक्ति सिद्धांत तथा उचित सिद्धांत के अवधारणाएं एवं प्रकार के बारे में विस्तृत वर्णन है।

C –7

1. यहां प्लेटो के 'काव्य संबंधी मान्यताएं' तथा अरस्तु के 'अनुकृति' एवं 'विरेचन सिद्धांत' का विस्तृत वर्णन है।
2. यहां लौंजाइनस के द्वारा दिया गया 'काव्य में उदात्त की अवधारणा',वड्र्सवर्थ के द्वारा दिया गया 'काव्य भाषा का सिद्धांत' तथा कॉलरिज के द्वारा दिया गया 'कल्पना' और 'फेंटेसी' के बारे में वर्णन है ।
3. यहां क्रोचे के 'अभिव्यंजनावाद', टी. एस. इलियट के 'परंपरा और व्यक्तिगत प्रतिभा', 'निवैयक्तिकता का सिद्धांत' तथा आई. ए. रिचड्र्स के 'मूल्य सिद्धांत' और 'संप्रेषण सिद्धांत' का वर्णन है।
4. यहां नई समीक्षा, मार्क्सवादी समीक्षा, शास्त्रीयतावाद, यथार्थवाद तथा शैली विज्ञान का विस्तृत वर्णन है ।

C – 8

1. यहाँ भाषा के स्वरूप एवं परिभाषा, भाषा और बोली, भाषा विज्ञान– स्वरूप, परिभाषा एवं अंग, भाषा विज्ञान का अन्य शाखाओं से संबंध ।
2. ध्वनि विज्ञान – स्वरूप एवं परिभाषा, ध्वनियों का वर्गीकरण, रुपिम विज्ञान : स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार आदि का ज्ञान प्राप्त होता है ।
3. वाक्य विज्ञान: स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार, अर्थ विज्ञान: स्वरूप एवं परिभाषा, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ आदि का ज्ञान प्राप्त होता है ।
4. हिन्दी भाषा के उद् भव एवं विकास क्रम, देवनागरी लिपि स्वरूप, नामकरण एवं विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते है ।

C – 9

1. गबन में विवाहित महिलाओं के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया गया है ।
2. त्यागपत्र में नारी कि यातना पूर्ण स्थिति की मार्मिकता का ज्ञान दर्शाया गया है ।
3. तुलसीदास के स्वरूप को एक सहज मानव के रुप में दर्शाया गया है ।
4. मन्नू भंडारी जी के उपन्यास में नैतिकता, अंतर्विरोध से जुझते सत्ताधारी वर्ग, मीडिया आदि चरित्रों पर कैसा व्यंग्य किया है वह ज्ञात होता है ।

C – 10

1. यहाँ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का उसने कहा था , प्रेमचंद का पूस की रात आदि कहानी का ज्ञान प्राप्त कर सकते है ।

2. जयशंकर प्रसाद के आकाशदीप, जैनेन्द्र का पाजेब कहानी का ज्ञान प्राप्त कर सकते है ।

3. तीसरी कसम के फणीश्वरनाथ रेणु, मलबे का मालिक – मोहन राकेश आदि का वर्णन किया गया है ।

4. दोपहर का भोजन अमरकांत, सिक्का बादल गया कृष्णा सोबती आदि कहानी का वर्णन किया गया है ।

C –11

1. यहां भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का अंधेर नगरी नाम प्रहसन की कथा का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

2. जयशंकर प्रसाद का स्कंदगुप्त जैसे ऐतिहासिक नाटक को पढ़ने का अनुभव प्राप्त हो सकता है।

3. मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन नामक नाटक को जानने का अवसर प्राप्त होता है।

4. रामकुमार वर्मा का औरंगजेब की आखिरी रात, गोविंदवल्लभ पंत का विषकन्या, विष्णु प्रभाकर का और वह जा न सके जैसे छोटे नाटक की कथा का वर्णन किया गया है।

C – 12

1. प्रस्तुत इकाई में सरदार पूर्ण सिंह का मजदूरी और प्रेम, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का भाव एवं मनोविकार नामक निबंध का आलोचना किया गया है जिससे मनुष्य जीवन के कर्म एवं मनोगत भावों का ज्ञान प्राप्त होती है ।

2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का देवदारु, विद्यानिवास मिश्र का कमेरे राम का मुकुट भीग रहा है नामक निबंध का विश्लेषण किया गया है जिससे जीवन के कठिनाइयों से लड़ने का साहस प्राप्त होता है।

3. शिवराज सहाय के _ महाकवि जयशंकर प्रसाद, रामवृक्ष बेनीपुरी के रजिया नामक निबंध का पूर्ण रूप से विश्लेषण किया गया है जिसमे प्रसादजी और रज़िया का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होती है।

4. डॉ नगेंद्र का दादा स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा नवीन , विष्णुकांत शास्त्री के ये हैं प्रोफ़ेसर शशांक नामक निबन्ध का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

DSE 1

1. असमिया भाषा: उद्भव और विकास जिससे असमिया भाषा साहित्य का ज्ञान ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

2. असमिया साहित्य का सामान्य परिचय : आदिकाल , वैष्णव युग , रोमांटिक युग आदि युगों का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

3. असमिया काव्य: वरगीत _ जिसमें शंकरदेव और माधवदेव के बरगीतों की विशेषताओं का आभास होता है ।

शंकरदेव का _ मन मेरे राम चरणहि लागू , नारायण ! काहे है भकति करों तेरा

माधवदेव का _ तेजरे कमलापति गोपाल गवाली पाराते नाचे

चन्द्र कुमार अगरवाला का मानव वंदना, टेजिमला

नलिनीवाला देवी का परमतृष्णा और जन्मभूमि आदि आधुनिक और पौराणिक बरगीत तथा कविता का ज्ञान प्राप्त होता है।

DSE 2

1. छायावाद का परिचय विशेषताएँ एवं छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद के हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, बीती विभावरी जागरी , मेरे नाविक , सौन्दर्य, तुम कौन संसृति जलनिधि तीर आदि आधुनिक कविता का सारांश जान सकते है।

2. छायावादी कवियों में निराला जी का स्थान उनके कविता वसंत आया, जागो फिर एक बार, स्नेह निर्झर बह गया है, सरोज सरोज स्मृति आदि कविताओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

3. छायावादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत का स्थान उनके प्रमुख कविता _ ताज, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, भारत माता आदि कविता तथा कवि का संक्षिप्त परिचय पाप्त कर सकते हैं।

4. छायावादी कवियों में महादेवी वर्मा का स्थान उनके कविता विरह जीवन का जलजात, मधुर मधुर मेरे दीपक जल, मैं नीर भरी दुख की बदली, पंथ होने दो अपरिचित आदि कविताओं का ज्ञान प्राप्त हो सकते हैं।

C 13

1. साहित्यिक पत्रकारिता का अर्थ, अवधारणा और महत्व, तथा भारतेंदुकालीन साहित्यिक पत्रकारिता उसका परिचय और प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

2. द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता का परिचय और प्रवृत्तियां तथा प्रेमचन्द्र और छायावादयुगीन पत्रकारिता का परिचय और प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

3. स्वातन्त्रोत्तर साहित्यिक पत्रकारिता का परिचय और प्रवृत्तियाँ साथ ही साथ समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता का परिचय और प्रवृत्तियो का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

4. महत्वपूर्ण पत्र _ पत्रिकाएं जैसे बनारस या अख़बार, भारत मित्र, हिन्दी प्रदीप, स्वदेश, प्रताप, जनसत्ता आदि पत्रिकाओं का विशेष जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

C 14

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी क्या है उसके स्वरूप, विशेषताएं एवं प्रकारों के साथ साथ संविधान में हिन्दी की स्थिति क्या है और हिन्दी भाषा के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

2. हिन्दी का मानकीकरण एवं शैलियाँ तथा हिन्दी के प्रयोग क्षेत्र क्या क्या है उसके बारे में जान सकते हैं ।

3. भाषा का व्यवहार जैसे कि सरकारी पत्राचार के प्रकार (सरकारी पत्र, अर्धसरकारी पत्र, ज्ञापन, परिपत्र, अनुस्मारक, सूचना, अधिसूचना, कार्यालय आदेश), टिप्पण और मसौदा/ आलेखन लेखन, संसार माध्यम : (आकाशवाणी, दुरदर्शन, चलचित्र) आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

4. हिन्दी भाषा में पारिवारिक शब्द निर्माण की प्रक्रिया एवं प्रयोगों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

DSE 3

1. तुलसीदास का व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ ही साथ रामचरित मानस का सामान्य परिचय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

2. तुलसीदास के रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड की घटनाएं तथा दोहावली 67 से 80 तक के सारांश को जान सकते हैं ।

3. तुलसीदास के कवितावली के उत्तराखंड तथा भक्तिकाव्य में कवितावली का स्थान क्या है उस विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

4. विनय पत्रिका के पद और विनय पत्रिका में भक्ति भावना की ज्ञान को प्राप्त कर सकते है।

DSE 4

1. उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के उपन्यास सेवासदन के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

2. प्रेमचंद का नाटक कर्बला के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

3. प्रेमचंद्र का निबन्ध साहित्य का उद्देश्य के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

4. प्रेमचंद का कहानी पंच परमेश्वर, दो बैलों की, कथा शतरंज के खिलाड़ी, ईदगाह, दूध का दाम आदि कहानियों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकता है।